MR. CHAIRMAN: I have called some Members. Now, whom should I have left? whom should I have not called? Whom should I leave? You tell me...*(Interruptions)*...

SHRI N. K. P. SALVE: It is entirely your prerogative and it is entirely your right, Sir.

MR. CHAIRMAN: I did not call Appa Saheb Kulkarni who is usually angry. But today he is quiet.

SHRI N. K. P. SALVE: Sir, you have provoked him now...*(Interruptions)*...

SHRI A. G. KULKARNI: Sir, it is your prerogative and I do not dispute it. I agree with it and, as a disciplined Member, I sit down...*(Interruptions)*......

MR. CHAIRMAN: I quoted you as an example for being a disciplined Member. You rasied your hand and I did not call you. Question no. 242.

*242. [*The questioners (Shri N. E. Balaram and Shri Gurudas Das Gupta) were absent. For answer vide column 32-33 infra*]

Disposal of Postal Bags in Calcutta

*243. SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Will the Minister of COMMUNICATIONS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that several thousand postal bags were stolen from the Postal Stock Depot, Calcutta or disposed of by the departmental heads in 1985;

(b) if so, what are the details thereof; and

(c) what action has been taken to stop such activities of the departmental staff and the action taken against those who disposed of the unserviceable bags worth Rs. 5.4 lakh between the period from April, 1975 to August, 1977?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (SHRI GIRIDHAR GOMANGO) : (a) Certain irregularities were found in 1985 in disposal of a large number of unserviceable bags. However, no theft could be established.

(b) Some of the irregularities in the disposal of unserviceable bags were :

(1) Accounts were not maintained properly.

(2) Unserviceable bags had been sold by weight and not by count.

(3) Bag balances were not being verified regularly as prescribed.

(4) Indenting of bags was not taken up through proper channel.

(5) No records pertaining to old unserviceable bags was available prior to May, 1979.

(c) Suitable instructions have been issued to monitor the bag accounting. Disciplinary proceedings against the erring officials have been ordered for the lapses citied at (b) above. The Department does not have detailed information regarding disposal of unserviceable bags between April, 1975 to August, 1977.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : Sir, pilferage seems to have become a normal but necessary activity of the postal staff. He has cited a number of irregularities. I call these irregularities as pilferages—another name for stealing. May I know from him, Sir, what specific action has been taken against those who indulge in such malpractice?

Then, in reply to part (c) of the main question he has stated that he has no information. It is a very old case. What prevented him from getting the information and telling us in the House?

संचार मंत्री (श्री वीर बहादुर सिंह): मान्यवर, जैसा कि कहा गया है कि अनियमिततायें नहीं हैं, बल्कि यह चोरी है। जब तक जांच चल रही है और जांच

रिपोर्ट में किसी के बारे में कोई चाज साबित न हो जाए, तब तक यह नहीं कह सकते हैं कि यह चोरी है या क्या है। जांच चल रही है, सेंट्रल विजिलेंस कमीशन द्वारा एग्ज़ामिन हुआ है। इस पर जांच चल रही है, कार्यवाही हो रही है और उसके बाद ही सारी बातें सामने आयेंगी कि यह चोरी है या क्या है।

जहां तक और बातें हैं कि जो अधिकारी हैं, उनके खिलाफ क्या कार्यवाही की गई है, सो सेंट्रल विजिलेंस कमीशन ने कहा था कि इनके ऊपर मेजर पेनल्टी के लिए चार्जशीट जारी किया जाए। वह जारी कर दिया गया है।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : The Calcutta case is only a specific case, a case in point. Similar irregularities have taken place all over India. May I know from the Minister whether he has set up a fool-proof method by which such irregularities are detected in time and proper and suitable action is taken against the guilty staff?

श्री वीर बहादुर सिंह: मान्यवर, इसके बाद यह सख्त आदेश दिया गया कि जो यह शिकायतें होती हैं, यह भविष्य में दोहराई न जाएं, इसको फूलप्रूफ करने के लिए आदेश जारी किये गये जिसमें विभिन्न स्तर के अधिकारियों की जिम्मेदारी ठहराई कि किस स्तर के अधिकारी कब उन थैलों की देखभाल करेंगे, कब जांच करेंगे और पूरी तरह से देखेंगे कि कोई गलती न होने पाये। इस तरह से देखने से यह जो आदेश जारी किया गया है इससे भविष्य में गलती होने की सभावनायें कम हो जायेगी।

यह कहा गया है कि जिन थैलों का उपयोग नहीं किया जा सकता है, उन्हें निरस्त करना, उनका निस्तार ऐसी समिति द्वारा किया जाए जिसमे निदेशालय, डाक सेवायें सर्कल का एक सहायक पोस्ट-मास्टर जनरल, सहायक निदेशक डाक सेवाएं और संबंधित पोस्ट मास्टर डिपो अधीक्षक शामिल हों। समिति यह प्रमाणित करे कि कितने थैलो का निपटान किया गया या नही कि जिनका कुल वज़न कितना है जैसा कि सर्किलों में होता है। बेकार और जिन थैलों की मरम्मत नहीं की जा सकती ऐसे थैलों को बेचने से पहले समिति के समक्ष टुकड़े-टुकडे कर दिए जाएं और बिक्री कर पूरा होने के तत्काल बाद टेंडर देने वाले व्यक्ति द्वारा उठा लिया जाए। सहायक पोस्ट मास्टर जनरल, सहायक निदेशक डाक सेवाएं तकनीकी नए डाक थैले सप्लाई करते समय उपास्थित रहने चाहिए तथा वे प्राप्त नए थैलों की संख्या प्रमाणित करेंगे और डे-बुक में प्रविष्टि की पुष्टि करेंगे। सहायक पोस्ट मास्टर जनरल, सहायक निदेशक डाक सेवाएं डाक हर वर्ष जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर में डाक थैलों की जाच करेगे 6-7 महीनों के दौरान जांच संबंधित पोस्टल .... **(व्यवधान)**

श्री सभापति: यह आर्डर्ज़ जो इश्यू किए गए हैं.....।

श्री वीर बहादुर सिंह: डिपो के अधीक्षक द्वारा किया जाएगा। मान्यवर, यह इतना किया गया है.....

श्री सभापति: क्या यह बहुत लंबा है?

श्री वीर बहादुर सिंह: कि हर तरह के अधिकारी उसको देखेंगे और इसमें गुजायश कम रहेगी।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: सभापति महोदय, मंत्री महोदय ने जो उत्तर दिया है वह अंतर्विरोधी है। उन्होंने कहा कि जाच हो रही है और फिर कहा कि कुछ अफसरों को चार्जशीट दे दी गई है, तो यह दोनों बातों का मेल कैसे बैठता है। यह मामला कलकत्ता का है। क्या मत्री महोदय का यह कहना तो नहीं है कि इसमें कही वामपथी सरकार का हाथ है?

श्री वीर बहादुर सिंह: मान्यवर, यह मामला सामने आया, 1986 में सैन्ट्रल विजिलेंस कमीशन को रैफर किया गया। सैन्ट्रल विजिलेंस कमीशन ने कहा कि उनके ऊपर चार्जशीट जारी किया मेजर पैनल्टी के लिए।

श्री एन० के० पी० साल्वे: किन-किन चोरियों में उनका हाथ है जरा अटल जी बता देते तो अच्छा रहता?

श्री वीर बहादुर सिंह: वह कार्यवाही सैन्ट्रल विजिलैंस कमीशन कर रहा है।

श्रीमती सत्या बहिन: सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से चाहूगी कि कुछ प्राईवेट एजेंसीज समानान्तर संचार व्यवस्था चला रही हैं उसके बारे मे सरकार का क्या विचार है?

श्री सभापति: समानान्तर व्यवस्था चल रही है उसमें यह बैग्ज़ इस्तेमाल हो रहे हैं? सवाल तो यह बैग्ज़ के बारे में है सत्या बहिन। देखिए पूरा डिपार्टमेंट का एक सप्लीमेंट्री में नहीं आता। इसलिए जो प्रश्न है उस पर ही सप्लीमेंट्री उठेगा।

श्रीमती सत्या बहिन: अच्छा जी।

SHRI NARREDDY THULASI REDDY: Sir, once the Postal Department was an effective and efficient department. The situation has changed nowadays. Thefts, corruption and irregularities are taking place. One of the main reasons for this is the acute shortage of staff. There has been no recruitment in the Postal Department for the last ten years. The budget estimates for 1988-89 are 50 crores.

MR. CHAIRMAN : This question is about bags.

SHRI NARREDDY THULASI REDDY : I am asking a general question about the Postal Department. Are you going to recuit more postal staff and are you going to increase the central plan outlay for the Postal Department in 1989-90?

MR. CHAIRMAN : The question does not arise. The present question deals with bags.

SHRI NARREDDY THULASI REDDY: Sir, it is a general question about the Postal Department.

MR. CHAIRMAN : It does not mean that you can ask anything about the Postal Department. The question is restricted to bags. Before you started asking your supplementary, I told you that.

SHRI NARREDDY THULASI REDDY :
One of the main reasons for these thefts, corruption and irregularities is the acute shortage of staff. So, are you going to increase the postal staff?

MR. CHAIRMAN : Are you going to increase the staff so that the bags may not be stolen? I am trying to put it within the purview of the question. क्या आप स्टाफ बढ़ाएंगे? इनका सवाल है आप स्टाफ बढ़ाएंगे ताकि बैग कम खराब हों।

श्री वीर बहादुर सिंह: इसका स्टाफ से कोई संबंध नहीं है।

श्री सभापति: इनका सवाल है कि इससे बैग कम खराब होते हैं।

श्री वीर बहादुर सिंह: ऐसा नहीं है। इसकी आवश्यकता नहीं है।

श्री सभापति: क्वेश्चन 244.

उद्योग मंत्री (श्री जे० वेंगलराव): सर, ...

श्री जसवंत सिंह: सभापति महोदय, वह जवाब देने खड़े हो गए और इन्होंने अभी सवाल पूछा नहीं।

श्री सभापति: वे समझते हैं एक दूसरे की बोली। एक ही जगह से आ रहे हैं। ....(**व्यवधान**)..... तो सवाल रखा है, उसी का जवाब दे रहे हैं।

Central assistance to set up new industrial projects in Andhra Pradesh

*244. SHRI B. SATYANARAYAN REDDY : The Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) what are the details of Central assistance given to industrial projects set up in Andhra Pradesh during the last three years;

(b) whether there is any proposal to set up more such projects in the State during the year 1989-90; and

(c) if so, by when these projects are likely to be set up?